पाठ 7

4Q5UFG

बाललीला

(कृष्ण भक्त कवियों में सूर तथा राम भक्त कवियों में तुलसीदास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत पाठ में तुलसीदास तथा रसखान के द्वारा रचित बाललीला के कुछ पद लिये गये हैं।)

सूरदास

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायौ।

मोसों कहत मोल कौ लीन्हौं, तू जसुमति कब जायौ।

कहा करौं यहि रिसि के मारे, खेलन हौं नहिं जात।

पुनि-पुनि कहत कौन है माता, को है तेरो तात।

गोरे नन्द, जसोदा गोरी, तू कत स्यामल गात।

चुटकी दै दै ग्वाल नचावत, हँसत सबै मुसकात।

तू मोहीं कौ मारन सीखी, दाउहिं कबहुँ न खीझै।

मोहन-मुख रिस की ये बातैं, जसुमति सुनि-सुनि रीझै।

सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत ही कौ धूत।

'सूर' स्याम मोहि गोधन की सौं, हौं माता तू पूत।

जसोदा हरि पालनैं झुलावै |

हलरावै, दुलराइ, मल्हावै, जोई सोइ कछु गावै |

मेरे लाल कौं आउ निंदरिया, काहैं न आनि सुवावै |

तू काहैं नहिं बेगिहिं आवै, तोकौ कान्ह बुलावै |

कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै |

सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि - करि सैन बतावै |

इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरैं गावै |

जो सुख सूर अमर - मुनि दुरलभ, सो नंद - भामिनी पावै |

सूरदास जी भक्तिकाल के प्रमुख कवि हैं | इनका जन्म सन् 1478 ई. में रुनकता नामक ग्राम (मथुरा) में हुआ था | इन्होने कृष्ण की बाललीलाओं एवं प्रेमलीलाओं का बड़ा ही मनोरम वर्णन किया है | ये वल्लभाचार्य के शिष्य थे | 'सूरसागर' नामक ग्रन्थ में इनके पद संकलित हैं | इनकी अन्य रचनाएँ हैं - 'सूर सारावली' तथा 'साहित्य लहरी' | इनका निधन सन् 1585 ई. में हुआ |

तुलसीदास

तन की दुति स्याम सरोरूह, लोचन कंज की मंजुलताई हरैं।

अति सुन्दर सोहत धूरि भरे, छवि भूरि अनंग की दूरि धरैं।।

दमकैं दतियाँ दुति दामिनि ज्यौं, किलकैं कल बाल विनोद करैं।

अवधेस के बालक चारि सदा, तुलसी मन-मन्दिर में बिहरैं।।

कबहूँ ससि माँगत आरि करैं, कबहूँ प्रतिबिंब निहारि डरैं।

कबहूँ करताल बजाइ कै नाचत, मातु सवै मन मोद भरै।।

कबहूँ रिसिआइ कहैं हठि कै, पुनि लेत सोई जोहि लागि अरैं।

अवधेस के बालक चारि सदा तुलसी मन-मन्दिर में बिहरैं।।

गोस्वामी तुलसीदास (1511.1623) हिन्दी साहित्य के महान कवि थे। इनका जन्म सोरों, कासगंज (एटा) में हुआ। आपने विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य 'रामचरित मानस' की रचना की। 'विनय पत्रिका' आपका अन्य महत्त्वपूर्ण काव्य हैं।

शब्दार्थ

खिझायौं=चिढ़ाना। **जायौ**=पैदा किया। **तात**=पिता। **खीझै**=डाँटना। **चबाई**=चुगली करने वाला। **धूत**=चालाक। **हलरावै**=बच्चों को हाथ में लेकर इधर-उधर हिलाना। **मल्हावै**=चुप कराना, पुचकारना। **बेगिहिं**=शीघ्र, जल्दी। **तोकौ**=तुमको। **फरकावै** = हिलाना, संचालित करना। **सैन** = इशारा, संकेत। **भामिनी**=पत्नी। **इति अंतर**=इसी बीच, इसी समय। **गात**=शरीर। **रिस**=क्रोध, गुस्सा। **रीझै**=अत्यन्त प्रसन्न। **गोधन की सौं**=गोवर्धन पर्वत की

सौगंध (कसम)। **हौं**=मैं। **अमर** =कभी न मरने वाला, देवता। **तन**=शरीर। **दुति**=चमक, सुन्दरता। **सरोरुह**=कमल। **कंज**=कमल। **मंजुलताई**=सुन्दरता। **लोचन**=नेत्र। **सोहत**=सुशोभित होना। **भूरि**=अधिक। **अनंग**=कामदेव। **दामिनी**=बिजली। **बिहरै**=केलि या क्रीड़ा करना, विहार (विचरण) करना। **ससि**= चन्द्रमा। **आरि**=जिद, हठ। **प्रतिबिम्ब**=परछाई, छाया। **निहारि**=देखकर। **करताल**=ताली बजाना। **मोद**=आनन्द, हर्ष। **जोहि लागि**=जिसके लिए।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1- बचपन में आपने भी माँ या दादी से कई लोरयाँ सुनी होगी। याद करके एक लोरी लिखिए।

2- नीचे बच्चों के बढ़ने की कुछ अवस्थायें दी गयी हंै, उन्हें क्रम से लगाइये-

- दौड़ कर चलना। - घुटनो के बल चलना। - पालने में लेटना

- स्कूल जाना। - गिरते पड़ते चलाना। - चारपाई/ चैकी पकड़ कर चलना।

विचार और कल्पना

1-अपने छोटे भाई बहन या छोटे बच्चों के क्रियाकलापों को देखकर आपके हृदय में जो भावों के चित्र उभरते हैं उन्हें अपने शब्दों में लिखिए ।

2-तुलसी दास ने राम का रूप वर्णन करते हुए उनके किन अंगों की उपमा कमल से दी है और क्यों ?

3-बालक राम चन्द्रमा को देखकर उसे खिलौना समझकर पाने का हठ करते हैं। चन्द्रमा को देखकर आपके मन में क्या विचार आता है ? लिखिए।

कविता से

1-यशोदा बालक श्रीकृष्ण को किस प्रकार सुला रही हैं ?

2-वह कौन सा सुख है जो देवताओं को भी दुर्लभ है ?

3-दाऊ क्या कहकर श्रीकृष्ण को चिढ़ाते हैं और यशोदा उन्हें क्या कहकर समझाती हैं ?

4-माँ यशोदा श्रीकृष्ण के मुख से कौन-कौन सी बातें सुनकर प्रसन्न हो रही हैं ?

5-निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिएः-

(क) कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै।

(ख) सूर श्याम मोहि गोधन की सौं, हौं माता तू पूत।

(ग) अवधेस के बालक चारि सदा तुलसी मन मन्दिर में बिहरैं।

(घ) कबहूँ रिसिआइ कहैं हठि कै, पुनि लेत सोई जेहि लागि अरैं।

भाषा की बात

1- पद में आये निम्नलिखित शब्दों का तत्सम् रूप लिखिए।

कान्ह, स्याम, दुरलभ, दुति, अवधेस, ससि।

2- 'मंजुल' शब्द में 'ता' प्रत्यय लगाकर भाव वाचक संज्ञा 'मंजुलता' बना है। इसी प्रकार

कुछ विशेषण शब्दों को खोज कर उन्हे भाववाचक संज्ञा में बदलिए।

3- बिम्ब शब्द में 'प्रति' उपसर्ग लगाकर 'प्रतिबिम्ब' शब्द बना है। इसी प्रकार 'प्रति' उपसर्ग लगाकर नये शब्द बनाइए।